प्रातः क्लास 5-11-71। ओमशान्ति "पिताश्री" शिव वावा याद है ?

," ऊँच ते ऊँच वाप द्वारा ऊँच ते ऊँच वर्सा की प्राप्ति याद की यात्रा द्वारा."

रिकार्ड:- जले न क्यों परवाना---ओमशान्ति। यह भी गीत भक्तिमार्ग के गाये हुये हैं। आखरीन में यह भी वन्द हो जावेंगे। उनकी दरकार नहीं हैं। गायन भी है वाप से एक सेकिण्ड में वर्सा मिलता है। तुम जानते हो वेहद के वाप से मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है। जीवनमुक्ति अर्थात इस दुखधाम से मुक्त। भ्रष्टाचारीपने से मुक्त। फिर क्या वनेंगे। उसके लिये एमआवजेक्ट तो वहुत अच्छी समझाने की है। वावा ने रात को भी समझाया कोई भी आते हैं तो उनको पहले2 परिचय दो ऊँच ते ऊँच भगवान का। वह है वेहद का वाप। पूछते हैं नायही का उद्देश्य क्या है। तो पहले2 परिचय देना है वेहद के वाप का। अव वह कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पावन वनेंगे। गाते भी हैं हे पतितपावन आओ। तो वाप की जरूर कोई अथार्टी भी होगी ना। कोई तो पार्ट मिला हुआ होगा उनको कहते ही हैं ऊँच ते ऊँच भगवान। याद भी सभी करते हैं। ऊँच ते ऊँच भगवान है तो जरूर उनकी प्राप्टी भी ऊँच ते ऊँच होगी। वाप माना ही प्राप्टी। वह है ऊँच ते ऊँच वाप। भारत में ही आते हैं। भारत को ही आकर ऊँच ते ऊँच वनाते हैं। वैकुण्ठ की सौगात ले आते हैं। मनुष्य सृष्टि में ऊँच ते ऊँच है ही देवी देवता सूर्यवंशी घराणा। समझने की वात है ना। सतयुग में ऊँच ते ऊँच सूर्यवंशी देवताओं का राज्य था तो जरूर सतयुग की स्थापना करने वाला ऊँच ते ऊँच भगवान ही है। उनको कहते भी हैं हैविन की स्थापना करने वाला हैविली गाड फादर। वह वाप है ना। उसके लिये ऐसे तो कव नहीं कह सकते कि वाप सर्वव्यापी है। सर्वव्यापी कहने से तो वाप का वर्सा ही गुम हो जाता है। कितनी मीठी वातें हैं। वाप माना ही वर्सा। तो वाप जरूर अपने वच्चों को ही वर्सा देंगे। सच्चों का वाप एक ही है। वही आकर सुख शान्ति का वर्सा देते हैं। राजयोग सिखलाते हैं वाकी तो सभी आत्मायें हिसाव किताव चुक्तु कर वापस चली जावेंगी। सुख और शान्ति का दाता वाप ही है। वही आकर के सुख और शान्ति का वर्सा देते हैं। दुख की पुरानी दुनिया अव खत्म होनी है। उसके लिये ही यह महाभारत लड़ाई है। अनेक धर्मों का विनाश और एक धर्म की स्थापना होती है। वुधि भी कहती है कलियुगके वाद जरूर सतयुग आना चाहिए। देवी देवताओं की हिस्ट्री मस्ट रिपीट। गाया भी हुआ है व्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। ऊँच ते ऊँच प्राप्त कराते हैं। वाप कहते हैं वच्चे यह अन्तिम जन्म पवित्र वनो अव मृत्युलोक मूर्दावाद और अमरलोक जिन्दावाद होता है। तुम सभी पार्वतियाँ हो। अमरकथा सुन रही है। वच्चे और वच्चियाँ दोनो वनेंगे ना। इसको अमरकथा कहो, तीजरी की कथा कहो। अक्सर करके मातायें ही कथा सुनती है। क्या अमरपुरी में पुरुष नहीं होंगे। जरूर दोनो ही होंगे ना। यह सभी वाप वैठ वच्चों को समझाते हैं। भक्तिमार्ग के शास्त्र क्या कहते है, वाप क्या समझाते हैं। यह भी कहते हैं भक्ति का फल भगवान देने आते हैं। वरोवर सतयुग में इन देवी देवताओं का ही सारे विश्व पर राज्य था। इन्हों को यह फल किसने दिया? कोई साधु सन्यासी आदि तो दे नहीं सकते। यह भी जानते हो भक्ति भी सभी कोई एक जैसे नहीं करते हैं। जो वहुत भक्ति करेंगे उनको फल भी जरूर ऐसा मिलेगा। जो पूज्य थे वही पुजारी वने हैं फिर पूज्य वनेंगे। भक्ति का फल तो मिलेगा ना। यह वातें भी सभी समझानी होती है। पहले2 तो त्रिमूर्ति पर ही समझाना है। ऐसे नहीं कि पहले2 सीढ़ी के चित्र पर ले आना है। नहीं। यह तो है डिटेल की वातें। पहले2 तो परिचय देना है वाप का। वह है ऊँच ते ऊँच। फिर व्रह्मा विष्णु शंकर फिर लक्ष्मी0 वाली चित्र तो ढेर के ढेर हैं भक्तिमार्ग के। वह सभी है फाल्टु। 8-10 भुजा वाली देवियाँ वा कलकत्ते की काली माता ऐसी भयंकर कोई होती ही नहीं। तो पहले2 वोलो ही यह कि यह वेहद का वाप है। जिससे हम फिर से स्वर्ग का वर्सा लेते हैं। ऊँच ते ऊँच भगवान वर्सा भी ऊँच ते ऊँच देते हैं। भारत में शिवजयन्ती भी मनाते हैं। जरूर हैविली गाड फादर ने ही आये हैविन स्थापन किया होगा। वेहद का वाप ही स्वर्ग का रचयिता है। स्वर्ग स्थापन करते हैं फिर 5000वर्ष वाद नर्क होता है। राम(परमात्मा)को भी आना पड़ता है। रावण को भी आना पड़ता है। राम वर्सा देते हैं, रावण श्राप देते हैं। ज्ञान अर्थात दिन